भारतीय ज्ञान परंपरा: वैश्विक विरासत

संपादक

डॉ. प्रवीण कुमार
डॉ. सुचित्रा शर्मा
प्रो. (डॉ.) अमरनाथ शर्मा
प्रो. (डॉ.) शशि बाला
डॉ. रश्मि जादौन

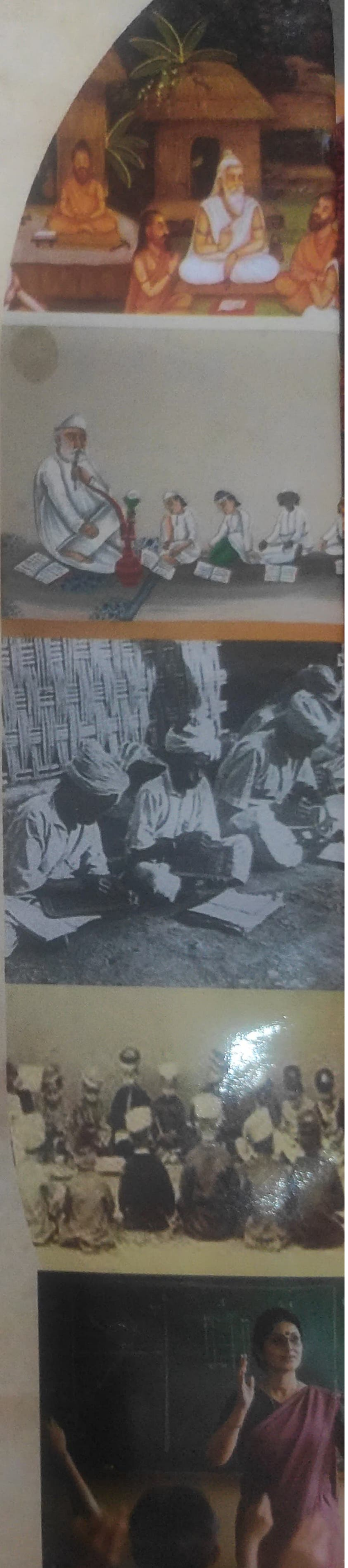

भारतीय ज्ञान परंपरा: वैश्विक विरासत

संपादक

डॉ. प्रवीण कुमार
डॉ. सुचित्रा शर्मा
प्रो. (डॉ.) अमरनाथ शर्मा
प्रो. (डॉ.) शशि बाला
डॉ. रश्मि जादौन

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली–110 002

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4697/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002
फोनः 2327 0497
(M) : 9810041277, 9654296751
E-mail : kanishka_publishing@yahoo.co.in
kanishkabooks@gmail.com

भारतीय ज्ञान परंपराः वैश्विक विरासत
प्रथम संस्करण–2025
© संपादक
ISBN: 978-93-93322-53-1

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4697/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द–संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन v

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली:
उद्देश्य, परिभाषा, दायरा और विशेषताएँ 1–14
सोनिया रानी

2. भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ: एक समग्र जीवन शैली 15–25
डॉ. उज्ज्वल डेका बरुआ

3. प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय:
शिक्षा केन्द्र से ज्योति पुंज तक 26–39
डॉ. मुस्तफा नवाज

4. प्राचीन शिक्षा पद्धति और 'तक्षशिला' 40–56
डॉ. पूनम शर्मा

5. नालंदा विश्वविद्यालय: इतिहास से आज तक 57–62
डॉ. अपर्णा यू नायर

6. वेदान्त दर्शन 63–72
डॉ. भुपेन्द्र कौर

7. वैदिक वाङ्मय में चित्रित धर्म का स्वरूप 73–85
डॉ. सिन्धु सुमन

8. कर्म का सिद्धान्त 86–96
डॉ. वन्दना सिंह

9. प्राचीन भारत में सांख्यिकी की विरासतः एक सुदृढ़ एवं सतत् ज्ञान प्रणाली — 97—114
डॉ. अरुण कौशिक

10. अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की ज्ञान परंपरा, संस्कृति, 21वीं सदी के कौशलों का उनके व्यावसायिक जागरूकता में प्रभाव पर चिंतन (छत्तीसगढ़ बस्तर संभाग के संदर्भ में) — 115—136
श्रीमती वाणी मसीह

11. भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यक्तित्व निरूपण में आधुनिक चिंतकों का चिंतन — 137—150
डॉ. ममता भारद्वाज एवं कु. दीपशिखा सिलमाना

12. स्वामी दयानंद सरस्वती के आलोक में भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन — 151—160
चेतना राणा एवं डॉ. गिरीश कुमार सिंह

13. भारतीय ज्ञान परंपरा उत्प्रेरित रवीन्द्रनाथ ठाकुर का आध्यात्मिक चिन्तन — 161—178
डॉ. रश्मि श्रीवास्तव

14. भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक शिक्षाः शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण — 179—190
डॉ. अनंत कुमार श्रीवास्तव

15. भारतीय ज्ञान परंपरा और नई शिक्षा नीतिः एक समन्वयात्मक विश्लेषण — 191—203
डॉ. सुचित्रा शर्मा एवं प्रो. (डॉ.) अमरनाथ शर्मा

16. भारतीय ज्ञान परंपराः राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में — 204—211
डॉ. प्रीति कुमारी

लेखक/लेखिका परिचय — 212—216

6

वेदान्त दर्शन

डॉ. भुपेन्द्र कौर

भारत में विकसित अनेकों दर्शनों में वेदान्त ही सबसे महत्वपूर्ण दर्शन कहा गया है, वेदान्त दर्शन का आधार उपनिषद ही कहे गए हैं। अतः पहले वेदान्त 'वेदों का अन्तिम भाग' शब्द का प्रयोग उपनिषद के लिए होता था। चूँकि उपनिषद अनेक हैं, अतः उनके विचारों में सामन्जस्य लाने के उद्देश्य से वेदान्त रचा गया। बादरायण ने 'ब्रह्म सूत्र' की रचना की। ब्रह्मसूत्र में सिद्धान्त की व्याख्या है। इसी ब्रह्म से विकसित वेदान्त दर्शन को "शारीरिक सूत्र" 'शारीरिक मीमांसा' व 'उत्तर मीमांसा' भी कहा जाता है।

बादरायण का ब्रह्मसूत्र चार अध्यायों में बँटा है। पहले अध्याय में ब्रह्म विषयक विचार हैं। दूसरे अध्याय में साधना से सम्बन्धित सूत्र हैं व चौथे अध्याय में मुक्ति के फलों के संबंध में चर्चा की गई है। यह चारों अध्याय अत्यंत संक्षिप्त व दुबौध थे, अतः इन्हें समझने के लिए अनेकों भाष्यकारों ने ब्रह्मसूत्र पर अपने अलग–अलग भाष्य लिखे। फलस्वरूप विभिन्न सम्प्रदाय पनपने लगे कुछ मुख्य सम्प्रदाय निम्नलिखित है–

- शंकर का अद्वैतवाद
- रामानुज का विशिष्ट द्वैतवाद
- मधवाचार्य का द्वैतवाद
- निम्बकाचार्य का द्वैता द्वैतवाद

वेदान्त दर्शन की प्रमुख वस्तु 'जीव' और 'ब्रह्म' है। दोनों के सम्बन्धों को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है। शंकर के मतानुसार, जीव व ब्रह्म दो नहीं है वे वस्तुतः अद्वैत है। इसी कारण इसे अद्वैतवाद कहा गया। रामानुज के अनुसार एक ही ब्रह्म में जीव तथा अचेतन प्रकृति विशेषण रूप में है। फलस्वरूप उनका दर्शन विशिष्ट द्वैतवाद कहा गया। मधवाचार्य 'जीव' तथा 'ब्रह्म' को दो मानते है। अतः इनके मत को द्वैतावाद कहा गया। इसी प्रकार निम्बार्क के अनुसार किसी दृष्टि से जीव और ब्रह्म दो हैं व किसी दृष्टि से दो नहीं है, अतः इनका दर्शन द्वैताद्वैत दर्शन कहा गया। कुछ भी हो सभी सम्प्रदायों में 'शंकर' के 'अद्वैतवाद' की गणना भारत के श्रेष्ठतम दर्शनों में की जाती है।

वेदान्त दर्शन

शंकर के अद्वैत वेदान्त में मूल सिद्धान्त निम्न श्लोक से स्पष्ट हो जाता है–

"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवौ ब्रहमैव नाडपरः"

अर्थात ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है, जीव ब्रह्म ही है तथा जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। अद्वैत दर्शन में अधिकारी शिष्य जब गुरू के पास जाता है तो वह उपेक्षित होकर सात प्रश्न पूछता है–हे गुरूदेव! बन्ध क्या है? यह बन्ध कैसे आया, इसकी प्रतिष्ठा भी है! इसकी स्थिति कैसी है! इस बन्धन से छुटकारा कैसे मिल सकता है? उसका विवेक कैसा होता है आदि इस आधार पर शंकराचार्य के तात्विक विचारों को सात भागों ब्रह्म, माया, अविद्या, आत्मा, विक्षेपशक्ति, अध्यासवाद, सृकष्ट प्रक्रिया आदि के अतंर्गत स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

पाल के अनुसार शंकराचार्य सातवी–आठवीं शताब्दी के मध्य, केरल राज्य के मालाबार तट पर स्थित कालदी नामक स्थान नम्ब्दरी ब्राह्मण कुल

में हुआ था, इनके पिता शिवगुरू, यजुर्वेदी ब्राह्मण थे। आठ वर्ष की अल्पायु में इन्होंने सन्यास ग्रहण कर लिया और नर्मदा नदी के तट पर निवास करने लगे। वहाँ प्रसिद्ध गोविन्द ऋषि के शिष्य बन गए। कुछ समय वहाँ रहकर काशी और फिर ब्रद्रीकाश्रम गये। पुनः काशी में आकर 12 वर्ष की अल्पायु में ब्रह्म सूत्र पर अपना भाष्य लिखा। उसके बाद गीता और फिर 10 उपनिषदों पर आपने भाष्य लिखे।

अष्ठवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्व शास्त्र वित्शोडशे कृतवान् भाष्य, द्वात्रिशे मुनिरभ्यगात्

इन्होंने किसी नए दर्शन के संस्थापक होने का दावा नहीं किया पर उपनिषदों की व्याख्या की और अद्वैतवाद का शक्तिशाली समर्थन किया। डॉ. दास गुप्ता के अनुसार, "उन्होंने सर्वत्र अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के नेताओं से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया और वेदान्त दर्शन को स्थापित किया। इनके द्वारा स्थापित चार मठ हिन्दू धर्म के आधार स्तम्भ है। यह मठ–मैसूर में श्रीनगर, काठियावाड में द्वारिका, उड़ीसा में पुरी और हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं में ब्रद्रीनम में स्थित हैं। 30 वर्ष की आयु में 820 ई. में इन महान आचार्य, चिन्तक व सन्यासी ने 32 वर्ष की अल्पायु में ही केदारनाथ में अपने नश्वर शरीर का त्याग कर दिया और अमरत्व को प्राप्त हुए।

वेदान्त दर्शन का शाब्दिक अर्थ

शंकराचार्य रचित वेदान्त जिसका शाब्दिक अर्थ वेदों का अन्तिम भाग है, यह उपनिषदों पर आधारित है इसे उत्तर मीमांसा भी कहते हैं। यह वेदों की टीका के नाम से भी जाने जाते हैं। वेद शब्द 'विद' धातु के निष्पन्न 'ज्ञान' का पर्यायवाची है। 'अन्त' से अभिप्राय 'मोक्ष' है। यह वेदों के ज्ञान का विवेचन ही है। भारत में संसार के ज्ञान का अन्त मोक्ष कहा जाता हैं। मोक्ष प्राप्ति का साधन ब्रह्म ज्ञान है। वेदान्त इस प्रकार से 'ब्रह्म' या 'ईश्वर' जो सभी के अन्त में पाया जाने वाला एक मात्र तत्व है, का ज्ञान है। यह वह ज्ञान है जिसके बाहर कुछ अन्य जानने को जी नहीं करता है–'जिस ज्ञान से इस देह का सर्वदा के लिए अन्त हो जाए' शायद इसी वेदान्त को 'ब्रह्म' के अतंर्गत रखा जाता है।

वेदान्त का स्वरूप ज्ञान पर आधारित है। इस ज्ञान का मुख्य विषय ब्रह्म ज्ञान है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहा गया है। जहाँ पूर्व मीमांसा में धर्म–जिज्ञासा है वहीं उत्तर मीमांसा या वेदान्त में ब्रह्म–जिज्ञासा है दोनों का लक्ष्य एक ही है: अन्तर केवल इतना है कि पूर्व मीमांसा धर्म पर आधारित है। और उत्तर मीमांसा ज्ञान पर आधारित है। इस ब्रह्म ज्ञान जिसे ब्रह्म सूत्र के नाम से भी जाना जाता है इसके चार अध्याय और सौलह पद के अर्न्तगत वर्णन किया है, इसके अंतर्गत ब्रह्म के स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस अध्याय में इतना विस्तार किया जाना अनावश्यक समझते हुए शंकराचार्य के भावों को सात मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत संक्षेप में परिचय दिया जा रहा है। शंकर के शब्दों में–**"वेदान्त वाक्य कुसुम ग्रन्थनार्थतत्ववाद ब्रह्म सुत्राणाम्।"** अर्थात 'वेदान्त, वाक्यरूपी कुसुमों का ग्रन्थन कर सर्वोत्तम ब्रह्मसूत्र रूप मनोहर माला का निर्माण किया गया है।

वेदान्त के अनुसार शिक्षा

वेदान्त केवल दर्शन नहीं है। यह सम्पूर्ण या आदर्श मानव बनने के लिए पथ प्रदर्शित प्रदान करता है। इसका ज्ञान व्यक्ति को यह निर्देश देता है कि क्या सीखे और उसे कैसे सीखे। जो भी व्यक्ति वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा ग्रहण करता है व उसके अनुसार क्रिया कलाप करता है उसे हम आदर्श शिक्षित व्यक्ति कह सकते हैं।

वेदान्त सम्प्रदाय की मान्यता है कि अपने वर्तमान के कर्म तथा पूर्व के कर्मों से नियन्त्रित रहता है। धर्म ही केवल मानव को ब्रह्माण्ड में संपोषित रखता है। अविद्या तथा माया का जाल ही मानव के दुःख व वेदान्त का कारण है। मनुष्य ज्ञान द्वारा विराग की भावना को अपना कर, दुःख व वेदना से स्वयं को बचा सकता है।

वेदान्त के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य–बालक को अज्ञान से दूर करके, सत्य ज्ञान की प्रतीति कराना है। इस ज्ञान से वह विद्या तथा अविद्या में भेद करने में समर्थ हो सकता है। वह सत्य तथा असत्य के भेद

को समझ सकता है वह अपने में निहित अनन्त शक्ति या आत्मा को पहचान सकता है। वह अविद्या को दूर करके पूर्णता या मुक्ति या ब्रह्म को पा सकता है। वह ब्रह्म व आत्मा की अभिन्नता को समझ सकता है।

वेदान्त के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

स्वामी शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म–सत्य व जगत–मिथ्या है। जबकि स्वामी रामानुजाचार्य ने जगत को मिथ्या न कहकर ईश्वर की लीला माना है। शंकराचार्य ने एक ब्रह्म के स्थान पर चित्र–अचित्र और ईश्वर तीन तत्व बताये हैं और तीनों प्रकार की सत्ता भी बताई है–1. प्रतिभाषिकी सत्ता, 2. व्यावहारिक सत्ता तथा 3. पारमार्थिकी सत्ता। उनके अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिसमें तीनों प्रकार की सत्ताओं से सम्बन्धित विषयों का समावेश हो। यद्यपि शंकराचार्य ज्ञान के अतिरिक्त और किसी ज्ञान को ग्राह्म नहीं समझते है, तथापि वे जगत सम्बन्धित ज्ञान को व्यावहारिक दृष्टि से सत्य मानते हैं। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत तीनों सत्ताओं के विषय में दार्शनिकों ने विचार दिए।

1. **प्रतिभाषिकी सत्ता–** इसका अभिप्रायः पारलौकिक सत्ता से है जो प्रतीत में सत्य मालूम पड़ती है परन्तु बाद में उसका विरोध हो जाता है और प्रकाश के आने पर वास्तविकता से अवगत हो जाते हैं तथा पूर्व का ज्ञान बाधित हो जाता है। इस ज्ञान के अन्तर्गत कल्पना, भ्रम, स्वप्न आदि में प्रकट होने वाले अनुभव आते हैं। इस सत्ता का ज्ञान प्राप्त करने हेतु धर्म व अर्थ के पुरूषार्थ आवश्यक होते हैं तथा ब्रह्म रूचि वाले आत्मिक विषय इस सत्ता के अंतर्गत अध्ययन किये जाते हैं।

2. **व्यावहारिक सत्ता–** इसका अभिप्रायः उस सत्ता से है जो पदार्थ या वस्तु संसार की व्यवहार–दशा में सत्य प्रतीत होती है। यह व्यवहार रूप से दिखाई देने वाले पदार्थों में निहित होती है। परन्तु इन पदार्थों की सत्यता ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति पर नष्ट हो जाती है उससे पूर्व नहीं। इस सत्ता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए धर्म, अर्थ, काम, पुरूषार्थ आवश्यक होते हैं और व्यावहारिक ज्ञान के विषय,

निश्चित ज्ञान के विषय तथा बाह्य रूचि वाले विषय इस सत्ता के अंतर्गत अध्ययन किये जाते हैं।

3. **पारमार्थिकी सत्ता–** यह सत्ता वास्तविक सत्ता है। ऐसी सत्ता विकास में बाधक नहीं होती यह लौकिक सत्ता भी कहलाती है। भौतिक जगत में उपस्थित सांसारिक ज्ञान पाने हेतु अर्थ एवं काम के पुरूषार्थ इस सत्ता की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

अतः वेदान्त की दृष्टि से पाठ्यक्रम में आत्मिक और व्यावहारिक विषयों का समावेश होना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम रूचि और संस्कारों के अनुरूप बनाया जाए, तो भी उसमें पारमार्थिक व व्यावहारिक विषयों का समावेश होना चाहिए। इसका कारण यह है कि यदि कुछ बालक बाह्य रूचि वाले होते हैं तो कुछ आन्तरिक रूचि वाले होते हैं अतः बाह्य रूचि वालों के लिए व्यावहारिक विषय और आन्तरिक रूचि वालों के लिए पारमार्थिक विषयों की आवश्यकता है। इस प्रकार समस्त विषयवस्तु को विभिन्न आत्मिक व व्यावहारिक विषयों के अध्ययन द्वारा छात्र परा व अपरा अर्थात पारलौकिक व लौकिक जगत का ज्ञान प्राप्त करते थे। पाठ्यचर्या, विभिन्न ज्ञान, अनुभवों व क्रियाओं से युक्त था। संस्कारों से अभिवृद्धित था। आध्यात्मिक पाठ्यचर्या, ब्रह्मचर्या से सम्बन्धित थी व लौकिक पाठ्यक्रम जगत या ईश्वर की लीला अभिव्यक्ति से थी व लौकिक पाठ्यक्रम जगत या ईश्वर की लीला अभिव्यक्ति से सम्बन्ध रखती थी।

वेदान्त के अनुसार शिक्षण विधियाँ

ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता रहा है। शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्ति की क्रिया का वर्णन 'विवेक चूड़ामणि' में किया है, जिसमें शिष्य में चार गुणों का होना आवश्यक बतलाया है। नित्यानित्य वस्तु विवेक, पिरक्ति, संयम, कर्म व उपासना–इन चार गुणों से युक्त होकर ही शिष्य वेदान्त–श्रवण का अधिकारी बन सकता है। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए गुरू छात्र को ब्रह्म स्वरूप का यथार्थ ज्ञान कराने के लिए अध्यारोप विधि तथा अपवाद विधि का प्रयोग करता है।

वेदान्त के अनुसार शिक्षक

शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त के अनुसार शिष्यों को ब्रह्मज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षक ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए। संसार में बहुत ही कम शिक्षक इस स्तर तक उठ सके हैं। शिष्यों को ब्रह्मज्ञान प्रदान करने के लिए ब्रह्मज्ञानी होने के साथ–साथ उसे शिक्षक धर्म का पता भी होना चाहिए। अतः व्यावहारिक दृष्टि से ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो ज्ञान के साथ–साथ बालक के व्यक्तित्व का भी आदर करे और स्वयं भी अध्ययन–अध्यापन में रत रहे। शिक्षक ही बालक को अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाला होता है। इसलिए उसे अत्यन्त आदर व सम्मान दिया जाता है। शिक्षक विद्यार्थी से प्रेम करता है और साथ–साथ उसके आचरण व व्यवहार पर नियन्त्रण भी रखता है। पिता समान उसकी रक्षा भी करता है।

वेदान्त के अनुसार बालक

अद्वैत वेदान्त के अनुसार बालक अनन्त ज्ञान के भंडार हैं तथा उनमें जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विभिन्नताएँ दिखाई देती है वे उनके कर्म जनित फलों का परिणाम हैं। यह विभिन्नताएँ उनके ब्राह्म लक्षण है न कि उनके स्वरूप लक्षण की दृष्टि से वे सब समान हैं। सब विभिन्नताएँ मिथ्या हैं वे आत्मिक रूप से समान हैं। फिर भी जब तक वे सब व्यावहारिक जगत में निवास करते हैं, तब तक जगत व उनका शरीर सत्य कहा जाएगा और यदि उन्हें सत्य रूप में स्वीकार किया जाता है तो फिर इनके व्यक्तित्व के निम्न पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक होगा–

1. बालक का नाम रूप शरीर।
2. बालक का आत्मिक अंग।
3. भौतिक व सामाजिक वातावरण।

जिसके द्वारा बालक शरीर व मन प्रभावित होता है। विद्यार्थी के लिए लगन व श्रम आवश्यक है। उसे विद्यार्जन के साथ चरित्र विकास करना आवश्यक है। बुद्धि का उचित विकास बिना चारित्रिक विकास के सम्भव नहीं है। इसके लिए, गुरू सेवा द्वारा गुणों का विकास होना अनिवार्य है। विद्यार्थी

को इन्द्रिय–संयम, ब्रह्मचर्य एवं विद्यार्जन के लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहिए। विद्या से तात्पर्य–छात्र को ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना है ज्ञान को वेदान्त में "तीसरी आँख" कहा गया है। यह उसे सब कार्यों के करने की सूझ देता है।

वेदान्त के अनुसार अनुशासन

वेदान्तिक अनुशासन में आत्मसंयम अनिवार्य है। आत्मसंयम में इन्द्रियों, मन, बुद्धि पर नियन्त्रण किया जाता है।

शंकराचार्य योगाभ्यास द्वारा इन्द्रियों को नियन्त्रित करने पर बल देते हैं। शिष्य योगाभ्यास के माध्यम से एकाग्रचित होकर ज्ञान प्राप्ति करने में समर्थ होगा साथ ही वह नैतिक जीवन के लिए संयम, दान, त्याग, तपस्या आदि के निर्वाह पर बल देते हैं। इन्द्रियों को अन्य विषयों से खींचकर ज्ञानार्जन के लिए केन्द्रित किया जाता है। यह भी दमनात्मक सिद्धान्त व अनुशासन का एक स्वरूप है। वेदान्त दर्शन में सत्यम्–ज्ञानम्–आनन्दम् को जीवन के लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया जाता है अर्थात सत्य का ज्ञान प्राप्त करके आनन्द की अनुभूति होती है। सत्यं–शिवं–सुन्दरं की प्राप्ति इसे ही कहते हैं। शिक्षक द्वारा अनुशासन से आनन्द की अनुभूति कराना प्रभावात्मक अनुशासन द्वारा सम्भव हो सकता है।

वेदान्तीय शिक्षा की समालोचना

शंकराचार्य की अद्वैत विचारधारा जो वेदान्तीय शिक्षा का आधार है वह यह दर्शाती है कि ब्रह्म व ईश्वर में कोई भेद नहीं, जीव व ब्रह्म में कोई भेद नहीं है, जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है। आज के भौतिकवादी संसार में यह आदर्शवादी सत्य मानव व्यवहार के प्रति सत्यता नहीं दर्शाता। आज प्रयोजनवादी विचारधारा मनुष्य को आर्थिक एवं भौतिक विकास के प्रति प्रोत्साहित कर रही है। इसके विपरीत वेदान्तीय दृष्टिकोण जो ब्रह्म ज्ञान के लिए, मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रेरणा है, आज के संदर्भ में तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता।

दार्शनिक तर्क के आधार पर प्रत्यक्ष तथ्यों को ही वास्तविक ज्ञान माना जाता है। ज्ञानेन्दियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही तथ्यात्मक, वास्तविक, प्रत्यक्ष ज्ञान

सर्वमान्य है किन्तु शंकर का अमूर्त, परा ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान ही पूर्ण है। यह ज्ञानाधारित विचारधारा जनसाधारण की समझ से बाहर है। अतः यह विचारधारा समाज के एक विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित रह गयी।

वेदान्ती शिक्षा का महत्व

वेदान्ती ज्ञान सातवीं शताब्दी में जन्मा ज्ञान है जो शंकराचार्य, रामानुजाचार्य मधवाचार्य, निम्बकाचार्य के ब्रह्म विचारों पर आधारित है। इस ज्ञान का महत्व निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है।

1. यह शिक्षा ज्ञान के सभी पक्षों से सम्बन्धित है। इसमें आत्मा, ब्रह्म, जीव को समानता का स्तर दिया गया है।

2. मानव जीवन को पंचतत्व से (आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी) विकसित जीव माना गया है जो अपना क्रमिक विकास करते हुए चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति का प्रयास करता रहता है।

3. पाँचों तत्वों में से प्रत्येक तत्व की अधिकता व न्यूनता के आधार पर तीनों गुणों का विकास होता है जिसके आधार पर सतोगुण, रजोगुण की प्रकृतियाँ विकसित होती हैं। यही वृत्तियाँ जगत मिथ्या, सत्य–मिथ्या व जगत सत्य की विचारधारा दर्शाती हैं इसी के आधार पर मनुष्य अपना व्यवहार सुनिश्चित करता हैं।

4. वेदान्त दर्शन जिसका आधार वेद तथा उपनिषद् हैं, केवल सैद्धान्तिक दर्शन नहीं है। यह एक सम्पूर्ण एवं आदर्श मानव बनने के लिए पथ प्रदर्शिका प्रदान करता है। यह पथ प्रदर्शिका व्यक्ति को यह निर्देश देती है कि वह क्या सीखे व कैसे उसे सीखे। एक व्यक्ति जो उन निर्देशों का पालन करता है उसे आदर्श शिक्षित मानव कह सकते हैं। अतः वेदान्त दर्शन मानव निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. वेदान्त दर्शन इस बात पर बल देता है कि संसार में प्रत्येक वस्तु आत्मा है। इस मान्यता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति नाम व रूप को त्याग कर आत्मानुभूति प्राप्त करने की चेष्टा करता है इस प्रकार

जाति पाँति की रूढ़िवादिता से ऊपर उठ जाता है। सबसे समानता का व्यवहार करता है। परस्पर भेद–भाव मिट जाने से ईर्ष्या, द्वेष व मन मुटाव की भावना खत्म हो जाती है।

6. शिक्षक का पथ प्रदर्शन एवं परामर्शदाता का स्वरूप एक आदर्श अभिभावक की भूमिका भी निभाता है जो बालक के उचित विकास के लिए सकारात्मक भूमिका का कार्य करता है।

अतः मनुष्य का प्रयास होना चाहिए कि वह बुद्धि, विवेक की देख रेख में कार्य करें। वृत्ति या मन का बुद्धि के संक्रमण पथ से गुजरते हुए विवेक में रूपान्तरण होने से आत्म प्रकाश होगा। इससे वृत्ति की पाश्विक एवं बुद्धि की मानवीयता, विवेक की दिव्यता में रूपान्तरित हो सकेगी, तभी "तमसो–मा–ज्योतिर्गमय" अर्थात वृत्ति की सुपात्वस्था से निकलकर विवेक के प्रकाश की ओर अग्रसर हो सकेंगे। आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार, इस आत्मिक प्रकाश को प्राप्त करने के लिए मानव को ईमानदारी, समझदारी, जिम्मेदारी एवं बहादुरी के गुणों का विकास करना होगा, जिनके बल पर हम विश्व के अनमोल प्राणी बन कर संसार में आदर्श जीवन जी कर मोक्ष को प्राप्त कर सकेगें। यही वेदान्ती शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

संदर्भ–सूची

पाण्डे, रा. श. (2013–14), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

सक्सेना, सरोज, (1996), शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

मित्तल, एम.एल. (2008), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

शर्मा, रा. ना. व शर्मा, रा. कु. (2006), शैक्षिक समाजशास्त्र, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

सलैक्स, शी. मै. (2008), शिक्षक के सामाजिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।

गुप्ता, रा. बा. (1996), भारतीय शिक्षा शास्त्र, रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा।

डॉ. प्रवीण कुमार, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय (काशी हिंदू विश्वविद्यालय के विशेषाधिकार के अंतर्गत) कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी। आपने एम.ए. (राजनीति विज्ञान) शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, बी.एड., एम.एड., एम.फिल. (शिक्षा), पीएच.डी. (शिक्षा) की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग (CIE) से प्राप्त की। आपने विशेष शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी प्राप्त किया। आपने एम.ए. (मनोविज्ञान) की उपाधि इग्नू से प्राप्त की है। आपकी रुचि के क्षेत्र शिक्षा मनोविज्ञान, निर्देशन एवं परामर्श, समावेशी शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, महिला शिक्षा एवं दलित विमर्श हैं।

सम्पर्क: मो.नं.-9015463480 ई.मेल. ciemed.praveen@gmail.com

डॉ. सुचित्रा शर्मा, एम. ए, (स्वर्ण पदक) एम.फिल, पी.एच-डी, एम.एस.सी. (मूल्य शिक्षा और आध्यात्म), पी.जी. डिप्लोमा (आध्यात्मिक स्वास्थ्य एवं परामर्श)। पिछले 42 वर्षों से अध्यापन के साथ-साथ विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, सेमिनार और वेबीनार में विषय विशेषज्ञ की भूमिका। 60 से अधिक शोध-पत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और क्षेत्रीय स्तर पर 14 आलेख प्रकाशित। 100 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, कार्यशाला और अधिवेशन में शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण।

प्रो. (डॉ.) अमरनाथ शर्मा, एम.ए., पी.एच-डी, एम.एस.सी (मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्म), पी. जी. डिप्लोमा (आध्यात्मिक स्वास्थ्य एवं परामर्श) बी.एन.वाई.एस (प्राकृतिक चिकित्सा), दिव्यायन कृषि विज्ञान केंद्र, रामकृष्ण मिशन (रांची) में परियोजना समन्वयक, बी.ए. आई.एफ (उर्लिकांचन) पुणे में बीपीओ, सेडमैप भोपाल में प्रबंध प्रशिक्षु। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में 25 शोध पत्र प्रकाशित। वर्तमान में शासकीय नवीन महाविद्यालय बोरी, दुर्ग छत्तीसगढ़ में समाजशास्त्र विषय में आचार्य पद पर कार्यरत।

प्रो. (डॉ.) शशि बाला, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा (उ.प्र.) संबद्ध डॉक्टर राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या में समाज[illegible] विभाग में विभागाध्यक्षा व शोध निर्देशक के रूप में कार्यरत हैं। इनके निर्देशन [illegible] शोध छात्र विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर शोध कार्य कर रहे हैं। आपने काशी हि[illegible] विद्यालय से बी.ए., एम.ए. (समाजशास्त्र), पीएच.डी. तथा बी.एड. किया है। आपके 40 सेमिनार में सहभागिता, 38 शोध-पत्र/लेख तथा 7 संपादित पुस्तकों के अध्याय प्रकाशित हो चुके हैं।

[illegible] जादौन, एम. एस.सी. (वनस्पति विज्ञान), एम.एड. तथा पी.एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) [illegible] है। आप, श्री महावीर इंस्टिट्यूट ऑफ लर्निंग एंड एजुकेशन, संबद्ध [illegible] विश्वविद्यालय झांसी) में बी.एल.एड. विभाग के लेक्चरर पद पर कार्यरत हैं। [illegible] पत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय, यू.जी.सी. केयर शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय [illegible] में आपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं।

₹ 800

ISBN 978-93-93322-53-1

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस

4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
फोन: 011-23270497, 9654296751
E-mail: kanishkabooks@gmail.com
kanishka_publishing@yahoo.co.in